बाल केंद्रित शिक्षा शास्त्र की समझ के साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाने में विद्यालय प्रमुखों की भूमिका

Role of school Heads in transaction teaching learning process by understanding Child centre

स्कूल नेतृत्व अकादमी
राज्य शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना

बाल केंद्रित शिक्षा शास्त्र की समझ के साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाने में विद्यालय प्रमुखों की भूमिका

तेज नारायण प्रसाद, प्राचार्य, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय ,समस्तीपुर

परिचय:-अपने देश में एक लम्बे अरसे से इस बात पर जोर दी जा रही है कि स्कूलों में बच्चों का सीखना बाल केंद्रित हों अर्थात शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इस तरह का बड़ा बदलाव हो कि बच्चों को स्वयं से करके सीखने का अवसर हो और शिक्षक सुगमकर्ता के रूप में बच्चों को सीखने में सहायता प्रदान करें ताकि बच्चें स्वयं से सीखते हुए ज्ञान और कौशल को प्राप्त कर सके । हमारे विद्यालयों में बाल केंद्रित शिक्षा अर्थात सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को स्वयं से सीखने, करके सीखना अर्थात अनुभवजन्य सीखना के बारे में दीर्घकालीन सपना रहा है। बाल केंद्रित शिक्षा को राष्ट्र शिक्षा नीति 2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूप रेखा -2008 में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था तथा स्कूलों में शिक्षक केंद्रित शिक्षा से बाल केंद्रित शिक्षा की ओर बड़ा बदलाव लाने के कई प्रयास किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 में दिए गए मार्ग दर्शक सिद्धांतों तथा शिक्षा शाश्त्रीय आधार के अनुसार बच्चे ज्ञान का सृजन स्वयं से करते हैं तथा उसमें खोजबीन करने की जिज्ञासा अकूत होती है और इस कारण से जानने के लिए बच्चे कई प्रश्न करते हैं । बच्चे आसपास की चीजों और घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं और स्वयं से अनुभव करते हैं । यदि शिक्षक एक सुगमकर्ता बनकर बच्चों को ज्ञानार्जन तथा उनके सीखने में सहायता करेंगे तो बच्चे ज्ञान, समझ तथा कौशल प्राप्त कर सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -1986 में बाल केंद्रित शिक्षा के बारे में स्थान दिया गया था कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आकलन अंतर्निहित है। अर्थात सीखने सिखाने की प्रक्रिया की अवधि में प्रत्येक बच्चे का सीखना (Learning) का आकलन होना चाहिए ताकि सभी बच्चों का सीखना तय कर सकेंगे। कुछ दशक पहले से शिक्षक केंद्रित शिक्षा से बाल केंद्रित शिक्षा की ओर ले जाने हेतु बड़े बदलाव के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 तथा बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा -2008 के अनुसार बाल केंद्रित शिक्षा की ओर ले जाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण भी दिया गया है। कई योजनाएं और नीतियां बनी जिसके आलोक में स्कूलों में बाल केंद्रित शिक्षा के लिए प्रयास किए गए, इसके बावजूद हमारे देश और अपने राज्य के अधिकांश स्कूलों में बाल केंद्रित शिक्षा के लिए सीखने सिखाने की प्रक्रिया की अभ्यास की जरूरत है। शिक्षा के अधिकार के अधिनियम 2009 सीखने के प्रतिफल लर्निंग आउटकम के बारे में परिभाषित है और इसके आधार पर एनसीईआरटी नई दिल्ली ने कक्षा बार और विषय वार कक्षा 1 से कक्षा 10 तक के लिए सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) का दस्तावेज तैयार किया गया है तथा इसी आधार पर राज्य स्तर पर एससीईआरटीबिहार ने अपने पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के परिप्रेक्ष्य में सीखने के प्रतिफल(Learning Outcomes) तैयार किया गया है जिसके आधार पर बच्चों के सीखने के क्रम में दक्षता आधारित सीखना सुनिश्चित करना है जिससे कि बच्चे अपने जीवन के विभिन्न परिस्थितियों में

अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग कर सकें तथा सीखे हुए ज्ञान और कौशल से हुए व्यवहार परिवर्तन से पर्यावरण मूल्यों ,सामाजिक मूल्यों ,नैतिक मूल्यों तथा संवैधानिक मूल्यों का आदर तथा व्यवहार कर सकें । राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) पर अर्थात दक्षता आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है जिसमें बच्चे अपने विषय वस्तु के ज्ञान के साथ-साथ कौशल की प्राप्ति कर सकें तथा उन ज्ञान और कौशलों को प्राप्त कर सके जिससे उनका जीवन का रास्ता सुगम हो जाए और एक अच्छे व्यक्तित्व के साथ-साथ राष्ट्र का निर्माण कर सकें। इन दक्षताओं में 21 वीं शताब्दी के कौशलों पर कार्य करने की जरूरत है जिसमें समालोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, खोजबीन करने की क्षमता ,समस्या- समाधान समाधान की क्षमता ,संप्रेषण कौशल ,आई.सी टी कौशल, अवधारणात्मक समझ और अवधारणात्मक अस्पष्टता इत्यादि जैसे दक्षताएं शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के संबंध में चिंता व्यक्त की है कि उच्च कक्षा के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान की दक्षता नहीं देखि जा रही है । बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लक्ष्य है कि कक्षा 3 के स्तर तक आते-आते बच्चे धाराप्रवाह पढ़ सके, पढ़ कर समझ सके तथा गणितीय अंकों के ज्ञान के साथ-साथ गणितीय संक्रियाएं पर स्वामित्व प्राप्त कर सके।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में चुनौतियां एवं सुझाव : इतने किए गए प्रयासों के बावजूद बाल केंद्रित शिक्षा की प्रक्रिया स्कूलों में नहीं हो पा रहा है इसके लिए निम्नलिखित चुनौतियों के रूप में देखा जा सकता है

i . बाल केंद्रित शिक्षा में बच्चों को सीखने सिखाने की प्रक्रिया में किस प्रकार व्यस्त करना है कि बच्चे स्वयं से विषय वस्तु के साथ ज्ञान अर्जन करें ,इसकी पुख्ता समझ शिक्षकों में नहीं है।

ii, पाठ्य पुस्तक में दिए गए विषय वस्तु को स्थानीय संसाधनों के माध्यम से तथा स्थानीय परिवेश से जोड़ने का प्रयास नहीं हो पा रहा है जिससे कि बच्चे पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ बाहरी दुनिया से जोड़ सकें, इस प्रयास की कमी है।

iii. सीखने- सिखाने की प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चों का आकलन नहीं हो पा रहा है। शिक्षक बच्चों को सीखने सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सुगमकर्ता के रूप में बच्चों को सीखने में सहायता किस प्रकार करें, शिक्षक में इन कौशलों की जरूरत है ।वस्तुतः सीखने सिखाने की प्रक्रिया में निर्माणात्मक आकलन का पक्ष मजबूत किया जाना अनिवार्य है।

iv. सीखने- सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को सटीक टी. एल .एम और उद्धेश्य पूर्ण गतिविधियों का संचालन किस प्रकार करें कि बच्चों में सीखने का प्रतिफल सुनिश्चित हो इसमें ज्यादा काम करने की जरूरत है।

v. अपने शिक्षण के दौरान शिक्षक किस प्रकार बच्चों का सीखने के स्तर को जानने के लिए कुछ मौखिक और कुछ लिखित प्रश्न करें तथा बच्चों को स्वयं से प्रश्न पूछने की आजादी हो, इस पर बल देने की जरूरत है।

vi. विषय वस्तु के सीखने के क्रम में शिक्षक बच्चों से चर्चा कराएँ, खोजबीन कराएं, समस्या समाधान के लिए प्रेरित करें और इसमें बच्चों को सीखने में सहयोग करें ,इसकी जरूरत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह बात कही गई है कि बच्चों में ज्यादा विषय वस्तु का बोझ नहीं देना चाहिए, इसके बजाय उनमें संप्रेषण कौशल यथा

संवाद करना, प्रश्न करना समस्या का समाधान करना विषय वस्तु की समझ और स्पष्टता सम्बन्धी कौशल का विकास जरूरी है।

vii. बच्चों को सिखाने के क्रम में शिक्षक बच्चों से न जुड़ पाने का कारण बच्चों से संवाद मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग ना किया जाना है तथा एक तरफा संवाद किया जाना सीखने की प्रक्रिया को नीरस बना देता है । बच्चों के शुरुआती सीखना में बच्चों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग प्रायः शिक्षकों के द्वारा नहीं किए जाने से कक्षायी वातावरण नीरस और अरुचिकर हो जाता है। सीखने सिखाने की प्रक्रिया आनंदायी और रोचक पूर्ण हो तथा सुगम हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि जिस क्षेत्र में स्कूल है, बच्चों से संवाद उस क्षेत्र की मातृभाषा में शिक्षकों को करना चाहिए तथा सीखना को सुगम बनाने के लिए मातृभाषा के साथ बिना बोझिल वाले वैसे टी. एल .एम का प्रयोग जिससे बच्चे आसानी से विषय वस्तु को सीख सकें. साथ ही साथ रोचक गतिविधियों का उपयोग करना चाहिए।

viii. बच्चों को स्वयं से सीखने की स्वायत्तता पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है जबकि बच्चों में ज्ञान का सृजन करने की अकूत क्षमता होती है। बाल केंद्रित शिक्षा का तात्पर्य है कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया सृजनात्मक उपागम के साथ हो अर्थात शिक्षक बच्चों से पाठ पुस्तक में दिए गए विषय वस्तु के बारे में सीखने की उद्देश्य की चर्चा करते हुए बच्चों को सीखने में व्यस्त होने का अवसर प्रदान करें तथा शिक्षक एक सुगमकर्ता के रुप में उनको सीखने में सहयोग करें, साथ ही संवाद स्थापित करें और सीखने का कौशल का विकास भी साथ ही साथ बच्चों में कराते रहें ।बच्चों को छोटे छोटे प्रयोग करने, चीजों, घटनाओं /परिघटनाओं को अवलोकन करने, तुलना करने, अंतर करने, वर्गीकरण करने, मापने ,सूचनाओं को एकत्र करने अर्थात आंकड़े एकत्र करने आंकड़ों का व्यवस्थापन करने विश्लेषण और तर्क करने तथा निष्कर्ष निकालने का अवसर प्रदान करें तो बच्चों का यह सीखना अनुभवजन्य होगा अर्थात जब बच्चों को स्वयं से सीखने का अवसर प्रदान किया जाएगा तो इस तरह की गतिविधियों में बच्चे व्यस्त हो कर ज्ञानार्जन करेंगे तथा साथ ही साथ कौशल का विकास भी करते चले जाएगे ।

उपर्युक्त स्थितियों और माहौल में बच्चों की सभी ज्ञानेंद्रियां सक्रिय होगी तथा उनके संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक पक्ष सक्रिय रहेंगे तब बच्चों का सीखना दक्षता के साथ होगी अर्थात जिस सीखने का प्रतिफल की संप्राप्ति की बात है, बच्चों में सीखने का प्रतिफल समय अंतराल पर गहराता जाएगा और सीखने के प्रतिफल पर बच्चे स्वामित्व प्राप्त कर सकेंगे।

ix. भले ही शिक्षक विषय वस्तु के ज्ञान से धनी हो किंतु शिक्षा शास्त्रीय आधार मजबूत ना हो तो ऐसे में बच्चों का सीखना नहीं हो पाएगा। शिक्षकों को विषय वस्तु के ज्ञान के साथ-साथ पाठ्यचर्या की समझ विकसित करनी होगी ताकि वह पाठ्यचर्या में दिए गए मार्गदर्शक सिद्धांत और बच्चों की उम्र और शिक्षाशास्त्र (pedagogy)के अनुसार योजनाबद्ध तरीके से सीखने का अवसर इस प्रकार उपलब्ध कराएँ कि आगे की कक्षाओं में विषय वस्तु के सापेक्ष ज्ञान और कौशल गहराता चला जाए।

x. प्रायः शिक्षण अधिगम कक्षा के कमरे तक सीमित रखा जाता है। बच्चों का वास्तविक और अनुभवजन्य सीखने - सिखाने की प्रक्रिया कक्षा के फर्श और दीवारों के बंद कमरे तक सीमित नहीं है बल्कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया

को संदर्भित स्थानों पर किया जा सकता है जैसे स्कूल के बरामदे, स्कूल के परिसर, बाग- बगीचे, तालाब ,खेत या वैसी जगह जो पाठ्य पुस्तकों में दिए गए विषय वस्तु से संदर्भित हों । स्कूल के आस-पास स्थानीय भ्रमण कराकर संदर्भित विषय वस्तु को दैनिक जीवन और दुनिया से जोड़ा जा सकता है।

xi. बच्चों का सीखना स्कूल तक ही सीमित है ।बच्चों का वास्तविक ज्ञान और कौशल स्कूल तक सीमित नहीं है बल्कि वैसे अवसर जिसमें बच्चे समुदाय में होने वाले क्रियाकलापों से सीखना हो सकता है तो समाज में विभिन्न प्रकार के जीवन निर्वाह से जुड़े पेशे के कामगारों के साथ संबंध स्थापित किया जा सकता है ।समय-समय पर बच्चों के उनके साथ सीखने का मौका देना चाहिए तथा स्थानीय कामगारों और कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित कर बच्चों को उनसे बातचीत करने और सीखने का अवसर देना चाहिए। ऐसा करने से बच्चों में व्यवसायिक शिक्षा दी जा सकती है और व्यवसायिक शिक्षा के ल्लिये उन्हें उन्मुख और प्रेरित किया जा सकता है ।

xii. प्राय: यह देखा जाता है कि कक्षा में बैठे बच्चों के कतारों में सबसे आगे बैठने वाले ऐसे बच्चे होते हैं जिनका सीखना बहुत अच्छा है और जो बच्चे मध्यम है और जिनके सीखने का आधार बहुत कमजोर है वे पिछले या सबसे पिछले कतार में बैठे रहते हैं। वैसे भी बच्चे हो सकते हैं जिनकी आंखें कमजोर है और कुछ ऐसे बच्चे जो सुन और बोल नहीं पाते, वे भी पिछले कतारों में मिलते हैं। कक्षा का ठोस प्रबंधन होना चाहिए ताकि समावेशी शिक्षा की उद्देश्य की पूर्ति किया जा सके इसके लिए भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों के बीच सामाजिक वर्गों और धर्मों में विभेद ना रहे तथा सब पर समान नजर और सद्भाव बनी रहे।

बाल केंद्रित शिक्षा में बदलाव लाने हेतु विद्यालय प्रमुख की भूमिका:- उपर्युक्त दिए गए चुनौतियों और सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय प्रमुख के निम्नलिखित दायित्व और कार्य हो सकते हैं।

1. विद्यालय प्रमुख का दायित्व है कि अपने शिक्षक समूह के साथ अकादमिक नेतृत्व और लोकतांत्रिक नेतृत्व के साथ कार्य करें ताकि पाठ्यचर्या में दिए गए मार्ग दर्शक सिद्धांतों और शिक्षा शाश्त्रीय आधार के अनुसार प्रत्येक बच्चे का समता पूर्वक सीखना और सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति हो सके।

2.अपने स्कूल और स्कूल परिसर में सीखने का माहौल तैयार करने के लिए स्कूल के भवनों और परिसर को तैयार करें और इसके लिए शिक्षकों को करने और सजाने का मौका दें ताकि बच्चे भवन के दीवारों पर उकरे हुए शब्द. अंक, चित्र इत्यादि से सीख सके ।

3.पूरे सत्र के लिए महान व्यक्तियों की पुण्यतिथि और प्रमुख दिनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों और खेलकूद कार्यक्रम के लिए वार्षिक कैलेंडर का निर्माण शिक्षकों के साथ मिलकर करें तथा सभी सह- पाठ गामी गतिविधियों(curricular activities)में प्रत्येक बच्चे की सहभागिता सुनिश्चित हो इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

4. बच्चों को सीखने-सिखाने के लिए स्थानीय संसाधनों से किस प्रकार स्कूल के कोनों और कमरों को समृद्ध किया जाए, इस पर विचार करना और कार्य करना और करवाना विद्यालय प्रमुख का कार्य है। शिक्षा की बदलती हुई नीतियाँ,वर्तमान नीतियाँ और उसका क्रियान्वयन करने हेतु विद्यालय प्रमुख को हमेशा अपडेट रहना आवश्यक है तथा इससे शिक्षकों के बीच साझा करना विद्यालय प्रमुख का दायित्व और कार्य है ।

5. प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर की उपलब्धि के आकलन हेतु विद्यालय आधारित आकलन (School Based Assessment)की प्रक्रिया का एक ठोस आधार बनाने के लिए विद्यालय प्रमुख को संबंधित विषय के शिक्षक को यह दायित्व दे कि सीखने-सिखाने के क्रम में प्रत्येक बच्चे का सीखने के स्तर का आकलन करें तथा बच्चों के सीखने के बाद आवधिक आकलन भी करते चले जाएं ताकि सभी बच्चों का सीखना संपूर्णता के साथ हो सके और सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) की संप्राप्ति हो सके।

6. सीखने- सिखाने के क्रम में बच्चों को गतिविधियों में व्यस्त करते हुए बच्चों का रोचक ढंग से सीखने से संबंधित शॉर्ट वीडियो क्लिप भी शिक्षक मोबाइल से तैयार कर बच्चों के अभिभावक के व्हाट्सएप पर भी भेजने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित करें। ऐसा करने से अभिभावकों को स्कूल के प्रति विश्वसनीयता बनी रहेगी और बच्चों का ड्रॉपआउट भी नहीं होगा।

7. नियमित रूप से अभिभावक शिक्षक की बैठक आयोजित कराने का दायित्व विद्यालय प्रमुख का है अभिभावक शिक्षक बैठक में शिक्षक अभिभावक से बच्चों की उपलब्धि पर बातचीत करने से अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा पर ध्यान दे सकेंगे।

8. स्कूल में शिक्षकों के साथ अकादमिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देना जरूरी होगा। इसके लिए शिक्षकों के बीच प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी(Professional Learning Community) का गठन किया जाना आवश्यक है । विद्यालय प्रमुख को इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि इस पीएलसी(PLC) के माध्यम से शिक्षक अपने द्वारा किए जाने वाले शिक्षण अधिगम तथा ज्ञान और अनुभव पर बात-चीत करे और बाल केंद्रित सीखने- सिखाने के नवाचार तरीके और शिक्षक अभ्यास का साझा कराने की भूमिका विद्यालय प्रमुख को कराना होगा।